"कूड़ कमाई"

• उठि वंज वटाऊड़िआ तै किआ चिर लाइआ । मुहलति पुंनड़ीआ कित कूड़ि लोभाइआ ।

अर्थः- हे भोले राही जीव ! उठ चल तैयार हो तू क्यों देर कर रहा है तुझे मिला उम्र का वक्त पूरा हो रहा है । तू किस ठगी में फसा हुआ है ?

कूड़े लुभाइआ धोह माइआ करहि पाप अमितिआ । तन भरम ढेरी जमहि हेरी कालि बपुड़े जितिआ ।

अर्थः- ध्यान कर, ये माया निरी धोखा है तू इस की ठगी में फसा हुआ है, और बेअंत पाप किए जा रहा है । ये शरीर आखिर मिट्टी की ढेरी हो जाएगा जम ने इसे अपनी निगाह में रखा हुआ है ।

माल जोबन छोडि वैसी रहिओ पैनण खाइआ । नानक कमाणा संगि जुलिआ नह जाइ किरत मिटाइआ ।1।

(5-459-460)

अर्थः- पर जीव बिचारा करे भी तो क्या ? इस बिचारे को आत्मिक मौत ने अपने काबू में किया हुआ है ये नहीं समझता कि ये धन - जवानी सब कुछ छोड़ के चला जाएगा, तब ये खाना - पहनना खत्म हो जाएगा । हे नानक ! जब जीव यहाँ से चलता है, तो कमाये हुए अच्छे - बुरे कर्म इसके साथ चले जाते हैं, किए कर्मों के संस्कारों के संचय को मिटाया नहीं जा सकता ।

• दिन राती कमाइअड़ो सो आइओ माथै । जिस पासि लुकाइदड़ो सो वेखी साथै ।

अर्थः- हे भाई ! जो कुछ दिन - रात हर वक्त अच्छे - बुरे काम तूने किए हैं वे संस्कार रूप बन के तेरे मन में उकरे गए हैं । हे भाई ! जिससे तू अपने किए कर्म छुपाता रहा है वह तो तेरे साथ ही बैठा देखता जा रहा है ।

संग देखै करणहारा काई पाप कमाईऐ । सुकृत कीजै नाम लीजै नरकि मूलि न जाईऐ ।

अर्थः- हे भाई ! विधाता हरेक जीव के साथ बैठा हरेक किए काम देखता रहता है । सो, कोई बुरा काम नहीं करना चाहिए बल्कि भले कर्म करने चाहिए, परमात्मा का नाम स्मरणा चाहिए नाम की इनायत से नर्क में कभी नहीं जाते ।

आठ पहर हरि नाम सिमरहु चलै तेरै साथे । भज साधसंगति सदा नानक मिटहि दोख कमाते ।1।

अर्थः- हे भाई ! आठों पहर परमात्मा का नाम स्मरण करता रह, परमात्मा का नाम तेरा साथ देगा । हे नानक ! कहः हे भाई ! साधु - संगत में टिक के परमात्मा का भजन किया कर भजन की इनायत से पिछले किए हुए विकार मिट जाते हैं ।

• वलवंच करि उदर भरहि मूरख गावारा । सभ किछ दे रहिआ हर देवणहारा ।

अर्थः- हे मूर्ख ! हे गवार ! तू औरों से छल - कपट करके अपना पेट भरता है । रोजी कमाता है । तुझे ये बात भूल चुकी हुई है कि हरि दातार सब जीवों को हरेक चीज दे रहा है ।

दातार सदा दइआल सुआमी काइ मनहु विसारीऐ । मिल साधसंगे भज निसंगे कुल समूहा तारीऐ ।

अर्थः- हे भाई ! सब दातें देने वाला मालिक सदा दयावान रहता है, उसको कभी भी अपने मन से भुलाना नहीं चाहिए । हे भाई ! साधु - संगत में मिल - बैठ शर्म उतार के उसका भजन किया कर भजन की इनायत से अपनी सारी कुलों का उद्धार कर लेती हैं ।

सिध साधिक देव मुनि जन भगत नाम अधारा । बिनवंत नानक सदा भजीऐ प्रभ एक करणैहारा ।2।

अर्थः- जोग - साधना में पहुँचे हुए जोगी, योग - साधना करने वाले भक्त,देवते समाधियां लगाने वाले सभी की जिंदगी का हरि - नाम ही सहारा बना चला आ रहा है । नानक विनती करता है, हे भाई ! सदा उस परमात्मा का भजन करना चाहिए जो खुद ही सारे संसार को पैदा करने वाला है ।

• खोट न कीचई प्रभ परखणहारा । कूड़ कपट कमावदड़े जनमहि संसारा ।

अर्थः- हे भाई ! कभी किसी के साथ धोखा नहीं करना चाहिए परमात्मा खोटे - खरे की पहचान करने के समर्थ है । जो मनुष्य को ठगने के लिए झूठ बोलते हैं, वह संसार में बारंबार जन्मते मरते रहते हैं ।

संसार सागर तिन्ही तरिआ जिन्ही एक धिआइआ । तजि काम क्रोध अनिंद निंदा प्रभ सरणाई आइआ ।

अर्थः- हे भाई ! जिस मनुष्यों ने एक परमात्मा का स्मरण किया है, जो काम - क्रोध त्याग के भले लोगों की निंदा छोड़ के प्रभु की शरण आ गए हैं, वे संसार समुंदर से पार हो गए ।

जलि थलि महिअलि रविआ सुआमी ऊच अगम अपारा । बिनवंत नानक टेक जन की चरण कमल अधारा ।3।

अर्थः- नानक विनती करता है हे भाई ! जो परमात्मा पानी में, धरती में, आकाश में हर जगह मौजूद है, जो सबसे ऊँचा है, जो अगम्य पहुँच से परे है और बेअंत है, वह अपने सेवकों की जिंदगी का सहारा है, उसके सोहने कोमल चरण उसके सेवकों के लिए आसरा हैं ।

• पेख हरि चंदउरड़ी असथिर किछ नाही । माइआ रंग जेते से संग न जाही ।

अर्थः- हे भाई ! ये सारा संसार जो दिख रहा है इसे धूँए का पहाड़ करके देख इस में कोई भी चीज सदा कायम रहने वाली नहीं । माया के जितने भी मौज - मेले हैं वह सारे किसी के साथ नहीं जाते ।

हर संग साथी सदा तेरै दिनस रैणि समालीऐ । हर एक बिन कछ अवर नाही भाउ दुतीआ जालीऐ ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा ही तेरे साथ निभने वाला साथी है, दिन - रात हर समय उसको अपने हृदय में संभाल के रखना चाहिए । एक

परमात्मा के बिना और कुछ भी सदा टिके रहना वाला नहीं इस वास्ते परमात्मा के बिना कोई और प्यार मन में से जला देना चाहिए ।

मीत जोबन माल सरबस प्रभ एक करि मन माही । बिनवंत नानक वडभागि पाइऐ सूख सहजि समाही ।4। (5-461)

अर्थः- हे भाई ! मित्र, जवानी, धन, अपना और सब कुछ ये सब कुछ के होते हुए भी एक परमात्मा को ही अपने मन में समझ । नानक विनती करता है, हे भाई ! परमात्मा बड़ी किस्मत से मिलता है जिन्हें मिलता है वे सदा आनंद में आत्मिक अडोलता में लीन रहते हैं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"